International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 380-381

आठवें दशक की कविता

मीनल दुबे
शोध केंद्र, म. ल. बा. क. महाविद्यालय, भोपाल बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

सातवें दशक के अंत एवं आठवें दशक के प्रारंभ में भारत के राजनीतिक पटल पर कुछ ऐसे दृष्य घटित हुए जबकि वातावारण असहज हो गया। यह स्थिति आपातकाल से उत्पन्न हुई जबकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर पाबंदी लगाई गई। कुछ समय के बाद जननायक तो बदले परंतु परिस्थितियाँ नहीं बदली। सातवें दशक के प्रारंभ से विद्रोह, असंतोष और आक्रामकता को एक पहचान कविता के रूप में मिलने लगी; इसी संघर्ष का मुहावरा वर्तमान कविता के अधिकांश कवियों के काव्य संसार को प्रभावित किए बिना नहीं रह सका। इससे पहले कविताओं के लक्ष्य भ्रष्ट व्यवस्थाएँ, राजनीतिवाद और पूंजीपतियों का विरोध था परंतु आठवें दशक की कविताओं ने बुनियादी मानसिकताओं को उभारा। राजनीति और प्रेमनीति से हटकर इस दशक की कविताओं में आम आदमी का अनुभव संसार मिलता है; इन कविताओं में आसपास की घटनाओं और वस्तुओं को विषय बनाया गया। आग, जंगल, चांद, स्टेशन, रेल, पत्थर, नट, बंजारे, आटाचक्की, चूल्हा, माँ, जाल, नदी, किला, कुल्हाडी आदि को कविताओं में सहेजा गया है इस तरह कविताएँ पुनः अपनी जड़ों की ओर वापस लौटती हैं।

कविता का स्वरूप

इस दशक की कविता चरित्रों की कविता है इसमें नायकों का प्रवेश निशिद्ध है। इस दशक की कविता में जीवन संदर्भों, प्रत्यक्ष अनुभवों और स्वयं के जीवन प्रसंगों का वर्णन मिलता है। कविता की चित्रण शैली से जीवन का साक्षात्कार हो जाता है। जिससे पाठक कविता को समझता ही नहीं बल्कि महसूस भी करता है क्योंकि ये कविताएँ उसे उसके स्वयं के आसपास के वातावरण से साक्षात्कार कराती हैं। इस कविता को जनवादी कविता कहना उचित होगा। इन कविताओं में समाज के ऐसे वर्ग का पक्ष लिया गया है जो दबे हैं, पिछड़े हैं, शोशित हैं। आठवें दशक की कविताओं में आम आदमी के शोषण को व्यक्त किया गया है। ये कविताएँ शोषित व्यक्ति की सघन पीड़ा को तो व्यक्त करती ही हैं साथ ही शोषण व्यवस्था पर भी प्रहार करती हैं। ये कविताएँ वर्तमान के प्रति सचेत करती हुई कविताएँ हैं। इनमें सामाजिक स्थिति के भयावह होने के दृष्य दिखाई देते हैं तो समाज में प्रेम भाव के लुप्त होने एवं हिंसा के बढ़ने की क्षुब्धता भी दिखाई देती है। उदाहरण के लिए

जो हैं खूँखार हँसी है उसके पास,
जो नष्ट कर सकता है उसी का है समयान
झूठ फिलहाल जाना जाता है सच की तरह।
प्रेम की जगह सिंहासन पर विराजती घृणा।
– ''आवाज भी एक है'' मंगलेश डबराल

इस दशक की कविताओं में सिर्फ निराशा ही नहीं दिखाई देती बल्कि असंतोष और निराशाओं के अंधेरे में आशा की किरण जागती हुई दिखाई देती है।

इस पर तरह–तरह की नफरतों से भरे इस बर्बर समय में
प्रेम का एक मनगढ़त किस्सा कहने में हर्ज ही क्या है
प्रेम के हर सच्चे झूठे किस्से के लिए मन करता है
जोर से चिल्लाकर कहूँ बार–बार मुकर्रर..... इरशाद!!
– राजेश जोशी

इस दशक की कविताओं में शोषक–शक्तियों के विरुद्ध तीव्रता से अनेक प्रश्न किए गए हैं। ये कविताएँ वर्तमान समाज में छिपे, दबे और चुप पड़े हुए आम आदमी को उद्घाटित करती है और जीवन को बेहतर बनाने के लिए सदैव प्रेरित करती है। इन कविताओं में कविता की सृजन प्रक्रिया, आम आदमी के अस्तित्व का संकट, नारी की पीड़ा, साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास, भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था, संयुक्त परिवार की आवश्यकता आदि की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। ये कविताएँ अपने समय एवं समाज की नग्न सच्चाई का सशक्त स्वर में उद्घाटन करती कविताएँ हैं। ये कविताएँ चेतना के साथ मनुष्य के पक्ष में खड़े होकर उसकी अस्मिता के संघर्ष के लिए उद्यत दिखाई देती है। इसमें इक्कीसवीं सदी के परिवर्तित परिदृष्य की यथास्थिति का आकलन बड़ी निष्ठा एवं नवीन बोध के साथ प्रस्तुत हुआ है। इस दौर की कविता दिनों दिन हो रहे भौतिक परिर्वतनों से आहत कविता है। अतीत की स्मृतियों, ग्रामों का शहरीकरण, बाजारवाद, महानगरों की संवेदनहीनता, बड़े–बूढ़ों की उपेक्षा किए जाना, संयुक्त परिवारों का टूटना, एकल परिवारों का चलन आदि विषयों को मार्मिक ढंग से छुआ गया है।–

शहर में इस तरह बसे
कि परिवार का टूटना ही बुनियाद हो जैसे
न पुरखे साथ आए न गाँव न जंगल न जानवर
शहर में बसने का क्या मतलब है
शहर में ही खत्म हो जाना
विशाल शरणार्थी शिविर है यह
हर कहीं भविष्यहीन तम्बू
– आलोक धन्वा

यद्यपि इस काल की कविता में परिवेशजन्य विशेषताओं के साथ पूर्ववर्ती साहित्य के भावबोधों को आत्मसात किया गया है तथापि जो मुख्य स्वर उभरकर आठवें दशक की कविता का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे जनवादी चेतना के प्रगतिशील स्वर है। इन कविताओं में सामाजिक समस्याओं का उद्घाटन उतने की महत्वपूर्ण ढंग से हुआ है जितना कि साधारण जनता के अभावग्रस्त जीवन से जुड़ी समस्याओं को लेकर हुआ है। इस दशक की कविता सभी

वादों–विवादों को एक किनारे करते हुए सार्वभौमिकता का आग्रह करके विकसित हुई है। आठवें दशक से कुछ समय पहले की कविताओं में क्रांति का पर्याय असहमति, विद्रोह, तोड़–फोड़ के रूप में था, वह इस दौर में कम होकर कविता को ज्यादा व्यवस्थित करते हुए उसे मनुष्य के गहरे संदर्भों से जोड़ता है। इस दशक की कविता सार्थक सृजन–संसार की कविता है जो आदमी को खासकर एक आम आदमी को उसके मूल संदर्भ और संघर्ष में पहचानती है। इस दशक के कवि ने मुख्यतः अपने जाने हुए परिवेश के रेशे–रेशे को जिंदा करने कोशिश की है और अपने आस–पास की छोटी–छोटी अनुभूतियों और चीजों को कविता का विषय बनाया, इससे कविता सैद्वांतिक रूढ़ियों से निकली और उसमें एक आत्मीय स्पर्श और नई उर्वरता आई। एक बुनियादी संवेदनशीलता और मानवीय व्यवहार को बचाए रखने का संघर्ष, घर–परिवार की दुनिया, स्त्री और बच्चों के प्रति चिंता, पर्यावरण की सुरक्षा, जातीय स्मृतियों की खोज, आस–पड़ोस, मौहल्ले के रागात्मक जीवन का अंकन आदि वे तमाम बातें है जिन्होंने अस्सी के दशक की कविता को गहन बनाया। यह बात इस दौर में उभरे कवि मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, अरुण कमल, उदय प्रकाश, असद जैदी, विष्णु नागर, ज्ञानेन्द्रपति, नरेन्द्र जैन, वीरेन डंगवाल, आलोकघन्वा, आदि की कविताओं में अलग–अलग तरीकों शैलियों से प्रमाणित होती रही है।

उपसंहार

सन् 1980 ई. को कविता की वापसी का वर्ष कहा गया है। आठवें दशक तक आते–आते हिंदी कविता की मुख्य धारा नई कविता का स्वभाव अपनी उग्रता और आक्रमकता के दृष्टिकोण को एक सुनिश्चित दिशा में अग्रसर करती है। आठवें दशक की कविता उस युवा पीढ़ी के हथियार के रूप में अपनी उपस्थितियों में समूची व्यवस्था से घायल पीड़ित और निराश होकर कराह रहा था। इस समय की काव्य पीढ़ी इसी युवा पीढ़ी के सार्थक संघर्ष की पहचान है। अतः यह कविता विसंगतियों से जूझती और उस पर चोट करती हुई व्यवस्था के विरुद्ध सब कुछ कहने का साहस जुटाती है। व्यवस्था के शिकार आम आदमी को मरहम लगाती है। आज इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ते हुए भारत में आठवें दशक की कविता वास्तव में समकालीन भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में उभर रहे पुनरुत्थानवाद का एक अभिन्न अंग है।

सन्दर्भ

1. चाँद की वर्तनी–राजेश जोशी वर्ष–2006 राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग, नई दिल्ली पृ0सं0 32
2. दो पंक्तियों के बीच–राजेश जोशी, पहला सं0 2002, पहली आवृत्ति 2004, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग नई दिल्ली पृ0सं0 40
3. सुभाषमार्ग नई दिल्ली पृ0सं0 46–47
4. चाँद की वर्तनी–राजेश जोशी, वर्ष–2006, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग, नई दिल्ली पृ0सं0 52
5. शब्दयोग (त्रै0मा0पत्रि0) सं0 सुभाषपंत, अतिथि सं0 उर्मिला शिरीश, मार्च–2009 योगदान, 922–23, फैज रोड, करोलबाग, नई दिल्ली, पृ0सं0 11–12
6. शब्दयोग (त्रै0मा0पत्रि0) सं0 सुभाषपंत, अतिथि सं0 उर्मिला शिरीश, मार्च–2009 योगदान, 922–23, फैज रोड, करोलबाग, नई दिल्ली, पृ0सं0 11
7. दो पंक्तियों के बीच–राजेश जोशी, पहला सं0 2002, पहली आवृत्ति 2004, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग नई दिल्ली पृ0सं0 49
8. चाँद की वर्तनी–राजेश जोशी, वर्ष–2006, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग, नई दिल्ली पृ0सं0 65